Sign in to edit and save changes to this file.

दैनिक भास्कर
देश का सबसे विश्वसनीय अखबार
लखनऊ संस्करण
वर्ष 06, अंक - 22
रविवार, 14 नवंबर 2021
पृष्ठ 12
मूल्य 3 रु*
For epaper → www.updainikbhaskar.com

# जौं की नई प्रजाति विकसित कर सीएसए ने बड़ी उपलब्धि की हासिल

भास्कर न्यूज

**कानपुर।** सीएसए के शोध निदेशालय के अधीन संचालित रबी शस्य अनुभाग के वैज्ञानिकों के 10 वर्षों के गहन शोध के परिणाम स्वरूप धान्य (अनाज) के क्षेत्र में कृषि विश्वविद्यालय ने जौं की नई प्रजाति विकसित कर बड़ी उपलब्धि हासिल की है। इससे प्रदेश का ऊसर प्रभावित क्षेत्र जौं उत्पादन में समृद्ध होगा। ज्ञातव्य हो कि चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय शोध/ शिक्षण एवं कृषि प्रसार के क्षेत्रों में निरंतर उपलब्धियां हासिल कर रहा है। राज्य बीज विमोचन उप समिति की 33वीं बैठक 22 जुलाई 2021 द्वारा जौं की केबी- 1425 ( आजाद जौं- 33 ) प्रजाति को विमोचित किया जा चुका था। जबकि केंद्रीय फसल मानक नोटिफिकेशन व विमोचन उप समिति की 87 वीं बैठक 18 अक्टूबर 2021 में जौं की केबी-1425 ( आजाद जौं-33 ) को अधिसूचित किया गया है। यह प्रजाति उत्तर प्रदेश के ऊषर प्रभावित क्षेत्रों व अन्य राज्य के किसानों हेतु वरदान साबित होगी। निदेशक शोध डॉ एच जी प्रकाश ने बताया कि इस जौं की नव विकसित प्रजाति की औसत उपज 33 कुंतल प्रति हेक्टेयर है।जबकि इस प्रजाति की उपज क्षमता 47.30 कुंतल प्रति हेक्टेयर है। जौं की इस प्रजाति के पकने की अवधि 120 दिन है। तथा यह प्रजाति पीला एवं भूरा रतुआ रोग के प्रति अवरोधी तथा पर्णदाग एवं कंडुआ के प्रति सहिष्णु है।उन्होंने बताया कि इस प्रजाति के दाने हल्के पीले रंग के होते हैं। तथा दानों में प्रोटीन (12.7%) अन्य जौं की प्रजातियों की अपेक्षा अधिक होती है। विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ डी.आर. सिंह ने इस सफलता पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कृषि वैज्ञानिकों की सराहना की है। जौं की इस नई प्रजाति को इजाद करने वाले वैज्ञानिक डॉ विजय यादव, डॉ पी के गुप्ता, डॉक्टर जे.बी.खान एवं उनकी टीम को बधाई दी है।

हिन्दुस्तान 08
कानपुर • रविवार • 14 नवंबर 2021

# सीएसए : बंजर भूमि में उत्पादन को खोजी जौ की नई प्रजाति

**कानपुर।** चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (सीएसए) ने 10 सालों तक चले शोध के बाद जौ की नई प्रजाति विकसित कर ली है। यह प्रजाति ऊसर प्रभावित क्षेत्रों के लिए है, जिससे जौ का उत्पादन बढ़ सकता है। इसकी खासबात यह है कि इसमें प्रोटीन की मात्रा अधिक है। केंद्रीय फसल मानक नोटिफिकेशन व विमोचन उप समिति ने इसे अक्तूबर में मान्यता दे दी है।

सीएसए की यह नई प्रजाति शनिवार को औपचारिक रूप से रिलीज हो गई। इससे प्रदेश का ऊसर प्रभावित क्षेत्र उत्पादन में समृद्ध होगा। इस प्रजाति का नाम केबी 1425 है, जो आजाद जौ के नाम से जानी जाती है। देश के ऐसे सभी राज्यों के किसानों के लिए यह प्रजाति वरदान साबित होगी। नव विकसित प्रजाति की औसत उपज 33 कुंतल प्रति हेक्टेयर है। उपज क्षमता 47.30 कुंतल प्रति हेक्टेयर है, जो 120 दिन में पकती है।

## रोग प्रतिरोधी भी नई प्रजाति

निदेशक शोध डॉ. एचजी प्रकाश ने बताया कि आजाद जौ की यह प्रजाति पीला और भूरा रतुआ रोग के प्रति अवरोधी तथा पर्णदाग एवं कंडुआ के प्रति सहिष्णु है। इस प्रजाति के दाने हल्के पीले रंग के होते हैं। दानों में प्रोटीन 12.7 प्रतिशत है, जो अन्य जौ की प्रजातियों की अपेक्षा ज्यादा है। कुलपति डॉ. डीआर सिंह ने इस सफलता पर खुशी जाहिर की है। जौ की इस नई प्रजाति को वैज्ञानिक डॉ. विजय यादव, डॉ. पीके गुप्ता और डॉ. जेबी खान ने खोजा है।

Sign in to edit and save changes to this file.

आज
महानगर
कानपुर 14 नवम्बर, 2021 5

# सीएसए ने विकसित की ऊसर भूमियों के लिए जौ की नई प्रजाति

**जौ के दाने में फास्फोरस, पोटेशियम, कैल्शियम, मैग्नीशियम, लोहा, जिंक आदि तत्व पाये जाते हैं**

कानपुर, 13 नवम्बर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के शोध निदेशालय के अधीन संचालित रबी शस्य अनुभाग के वैज्ञानिकों के 10 वर्षों के गहन शोध के परिणाम स्वरूप धान्य (अनाज) के क्षेत्र में कृषि विश्वविद्यालय ने जौ की नई प्रजाति विकसित कर बड़ी उपलब्धि हासिल की है। इससे प्रदेश का ऊसर प्रभावित क्षेत्र जौ उत्पादन में समृद्ध होगा। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय शोध/ शिक्षण एवं कृषि प्रसार के क्षेत्रों में निरंतर उपलब्धियां हासिल कर रहा है। राज्य बीज विमोचन उप समिति की 33वीं बैठक 22 जुलाई 2021 द्वारा जौं की केबी- 1425 ( आजाद जौं-33 ) प्रजाति को विमोचित किया जा चुका था, जबकि केंद्रीय फसल मानक नोटिफिकेशन व विमोचन उप समिति की 87वीं बैठक 18 अक्टूबर 2021 में जौं की केबी-1425 ( आजाद जौं-33 ) को अधिसूचित किया गया है। यह प्रजाति उत्तर प्रदेश के ऊषर प्रभावित क्षेत्रों व अन्य राज्य के किसानों हेतु वरदान साबित होगी। निदेशक शोध डॉ एच जी प्रकाश ने बताया कि इस जौं की नव विकसित प्रजाति की औसत उपज 33 कुंतल प्रति हेक्टेयर है, जबकि इस प्रजाति की उपज क्षमता 47.30 कुंतल प्रति हेक्टेयर है। जौं की इस प्रजाति के पकने की अवधि 120 दिन है। तथा यह प्रजाति पीला एवं भूरा रतुआ रोग के प्रति अवरोधी तथा पर्णदाग एवं कंडुआ के प्रति सहिष्णु है। उन्होंने बताया कि इस प्रजाति के दाने हल्के पीले रंग के होते हैं। तथा दानों में प्रोटीन (12.7 प्रतिशत) अन्य जौं की प्रजातियों की अपेक्षा अधिक होती है। तथा विटामिन ए ( 21.15) अंतर्राष्ट्रीय इकाई तथा अमीनो एसिड ग्लूटामेट की मात्रा सबसे अधिक पाई गई है। जौ के दाने में फास्फोरस, पोटेशियम, कैल्शियम, मैग्नीशियम, लोहा एवं जिंक आदि तत्व पाए जाते हैं। सीएसए के कुलपति डॉ डी.आर. सिंह ने इस सफलता पर कृषि वैज्ञानिकों की सराहना की है। जौं की इस नई प्रजाति को विकसित करने वाले वैज्ञानिक डॉ पी के गुप्ता, डा. सोमवीर, डॉ विजय कुमार यादव, डॉ. जे.बी.खान व अन्य वैज्ञानिकों को बधाई दी है।

Sign in to edit and save changes to this file.

उत्तराखंड/उत्तर प्रदेश का प्रथम द्विभाषीय (हिन्दी-अंग्रेजी) सांध्य दैनिक समाचार पत्र

जनमत टुडे

वर्षः12 | अंकः304 | देहरादून, शनिवार, 13 नवंबर, 2021 | पृष्ठः08

# सीएसए ने विकसित की ऊसर भूमियों के लिए जौ की नई प्रजाति

**अनिल मिश्रा** (जनमत टुडे)

**कानपुरः** चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के शोध निदेशालय के अधीन संचालित रबी शस्य अनुभाग के वैज्ञानिकों के 10 वर्षों के गहन शोध के परिणाम स्वरूप धान्य (अनाज) के क्षेत्र में कृषि विश्वविद्यालय ने जौं की नई प्रजाति विकसित कर बड़ी उपलब्धि हासिल की है इससे प्रदेश का ऊषर प्रभावित क्षेत्र जौं उत्पादन में समृद्ध होगा ज्ञातव्य हो कि चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय शोध, शिक्षण एवं कृषि प्रसार के क्षेत्रों में निरंतर उपलब्धियां हासिल कर रहा है राज्य बीज विमोचन उप समिति की 33वीं बैठक 22 जुलाई 2021 द्वारा जौं की केबी—1425 (आजाद जौं—33) प्रजाति को विमोचित किया जा चुका था जबकि केंद्रीय फसल मानक नोटिफिकेशन व विमोचन उप समिति की 87 वीं बैठक 18 अक्टूबर 2021 में जौं की केबी—1425 ( आजाद जौं—33) को अधिसूचित किया गया है यह प्रजाति उत्तर प्रदेश के ऊषर प्रभावित क्षेत्रों व अन्य राज्य के किसानों हेतु वरदान साबित होगी निदेशक शोध डॉ एच जी प्रकाश ने बताया कि इस जौं की नव विकसित प्रजाति की औसत उपज 33 कुंतल प्रति हेक्टेयर है। जबकि इस प्रजाति की उपज क्षमता 47.30 कुंतल प्रति हेक्टेयर है जौं की इस प्रजाति के पकने की अवधि 120 दिन है तथा यह प्रजाति पीला एवं भूरा रतुआ रोग के प्रति अवरोधी तथा पर्णदाग एवं कंडुआ के प्रति सहिष्णु है उन्होंने बताया कि इस प्रजाति के दाने हल्के पीले रंग के होते हैं तथा दानों में प्रोटीन (12.7%) अन्य जौं की प्रजातियों की अपेक्षा अधिक होती है।

Sign in to edit and save changes to this file.

देश-विदेश | लखनऊ और देहरादून से प्रकाशित राष्ट्रीय हिंदी दैनिक | उत्तर प्रदेश

62 खिलाड़ी खेल पुरस्कार से सम्मानित, नीरज चोपड़ा समेत 12 को खेल... 12

यूपी चुनाव 2022: आज से पूरे प्रदेश में कांग्रेस... 03

जन एक्सप्रेस

@janexpressnews janexpresslive janexpresslive www.janexpresslive.com/epaper

लखनऊ | रविवार | 14 नवंबर, 2021

लखनऊ वर्षः 13 | अंकः 33 मूल्यः ₹3.00/- पेज : 12

# जौ की नई प्रजाति की गई विकसित



**कानपुर नगर।** चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के शोध निदेशालय के अधीन संचालित रबी शस्य अनुभाग के वैज्ञानिकों द्वारा धान्य (अनाज) के क्षेत्र में जौं की नई प्रजाति विकसित की गई है। जिससे प्रदेश का ऊषर प्रभावित क्षेत्र जौं उत्पादन में समृद्ध होगा। निदेशक शोध डॉ.एच.जी.प्रकाश ने बताया कि देशभक्तों के गए शोध के परिणाम स्वरूप कृषि विश्वविद्यालय ने जौं कि यह नई प्रजाति विकसित की है जिसकी औसत उपज 33 कुंतल प्रति हेक्टेयर है। जबकि इस प्रजाति की उपज क्षमता 47.30 कुंतल प्रति हेक्टेयर तथा पकने की अवधि 120 दिन है। उन्होंने बताया कि यह प्रजाति पीला एवं भूरा रतुआ रोग के प्रति अवरोधी तथा पर्णदाग एवं कंडुआ के प्रति सहिष्णु है। इस प्रजाति के दाने हल्के पीले रंग के होते हैं जिसमें अन्य जौं की प्रजातियों की अपेक्षा प्रोटीन 12.7 फीसदी अधिक होती है। तथा विटामिन ए 21.15 अंतर्राष्ट्रीय इकाई तथा अमीनो एसिड ग्लूटामैट की मात्रा सबसे अधिक पाई गई है। उन्होंने बताया कि जौं के दाने में फास्फोरस, पोटेशियम, कैल्शियम, मैग्नीशियम, लोहा एवं जिंक आदि तत्व पाए जाते हैं। विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ.डी.आर. सिंह ने इस सफलता पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कृषि वैज्ञानिकों की सराहना की। उन्होंने जौं की इस नई प्रजाति को इजाद करने वाले वैज्ञानिक डॉ.पी.के.गुप्ता, डॉ.सोमवीर, डॉ.विजय कुमार यादव,डॉ. जे.बी.खान एवं अन्य वैज्ञानिकों को बधाई दी।